श्री महावीर

ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री महावीर ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, ११०० प्रतियाँ
कवर-पृष्ठ	:	प्राची जैन शिवपुरी
प्रसंग	:	२२वाँ चातुर्मास, २०२०, शिवपुरी
लागत मूल्य	:	१५/-
प्रकाशक	:	श्री जैनोदय विद्या समूह
प्राप्ति स्थान	:	१. संजीव कुमार जैन **2/251** सुहाग नगर, फिरोजाबाद (उ.प्र.) सम्पर्क–**9412811798, 9412623916** २. निखिल, सुशील जैन करैरा, झाँसी **9806380757, 9407202065**
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

श्री जवाहरलाल जी–श्रीमती लालीदेवी एवं
वीर (हैप्पी) जैन की पुण्य स्मृति में
श्री अशोककुमार–श्रीमती हेमा जैन
महावीर (रोहित) जैन भिण्ड वाले
शिवपुरी (म.प्र.)

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस तरह भक्तामर स्तोत्र के द्वारा श्रीवृषभदेव की भक्ति दीप अर्चना के माध्यम से की जाती है उसी तरह वर्तमान शासननायक श्री महावीर भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति '**महावीर ऋद्धि विधान एवं दीपं अर्चना**' की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मरण से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है। श्रद्धा के साथ भक्ति की भावना से ४८ अर्घ्य/दीपों के साथ अथवा एक दीप के साथ इस स्तोत्र की आराधना करने से सभी इष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

राजेश बोटा, अशोक, अर्चित, पुनीत, नमन, विशाल, रूपेश, सौरभ, रौनक, पीयूष, अभिषेक, रोहित, कलश पाठशाला की बहिनें प्राची, ऐश्वर्या, चाहना, आशी, स्वाति, खुशी, प्रतिभा, रूपाली आदि लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा. ब्र. संजय, मुरैना- 9425128817

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा....
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।

जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

चौबीसी का अर्घ्य (लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फु हार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री महावीर दीप अर्चना करने के लिए

पेज २८ पर बने चित्र के जैसे स्वस्तिक बनाकर प्रत्येक बिन्दु पर एक-एक दीपक सजाते हुए ४८ मंत्रों के साथ दीप अर्चना करना चाहिए।

श्री महावीर पूजन

स्थापना

जय महावीर-जय महावीर,
शासननायक-जय महावीर।

(ज्ञानोदय)

जय बोलें हम महावीर की, इतना बस वरदान मिले।
महावीर से महा वीर का, बनने का बस ज्ञान मिले॥
''जियो और जीने दो'' सबको, समझ बूझकर अपनाएँ।
करें भक्ति से महा अर्चना, महावीर के गुण गाएँ॥
अष्ट द्रव्य की थाल सजाई, भक्ति भाव से खुशी-खुशी।
अगर न आए मन में प्रभु तो, अपनी होगी सुनो हँसी॥
अर्जि हमारी मर्जि तुम्हारी, अपनालो या ठुकरा दो।
आज नहीं तो कल जब चाहो, नाँव हमारी तिरवा दो॥

जय महावीर-जय महावीर,
शासननायक-जय महावीर।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

यह दुनियाँ तो सूख रही पर, नयन हमारे बरस रहे।
दर्शन पूजन के प्यासे हैं, आकुल-व्याकुल तरस रहे॥
अर्पण यह जल मिले कृपा-जल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

जल जलकर इतने जल बैठे, भस्मसात ज्यों जंगल हों।

मिला न कंचन खिला न उपवन, हरो ताप अब शीतल हों॥
अर्पण चंदन त्रिशलानन्दन, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय संतारतापविनाशनाय चंदनं...।

दर्शन और प्रदर्शन करके, हम भूले प्रभु की बतियाँ।
रागी बने, नहीं वैरागी, तभी भटकते भव-गतियाँ॥
पुंज चढ़ाएँ शिव पद पाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

ना माला ना बाग बगीचा, नहीं बनें हम गुलदस्ता।
बस छोटा सा पुष्प बनें हम, जो प्रभु के पद में वसता॥
पुष्प चढ़ाएँ काम नशाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कभी नमक से कभी नीर से, कभी छका-छक भोगों से।
भूखे प्यासे मन बहलाया, किन्तु बचे ना रोगों से॥
क्षुधा मिटे नैवेद्य चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

ना बनना सूरज ना चंदा, ना जुगनूँ ना ही बिजली।
बस छोटा सा दीप बनें जो, करे आरती भली-भली॥
मोह मिटाने दीप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

सम्यक् तप बिन राख हुए पर, कर्म झुलस भी ना पाए।
अब खुद को ही धूप बनाकर, कर्म जलाने हम आए॥
जगत्-भूप को धूप चढ़ाएँ, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

संकल्पों की धरती पर तो, लगें सफलता के फल ही।
हमें वही संकल्प दान दो, तुम्हें चढ़ाएँ हम फल भी॥
मिले मोक्ष फल अर्पण ये फल, पाँच नाम को तुम धारो।
वीर! बालयति-पंचम अब तो, भक्त भावना स्वीकारो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य (दोहा)

षष्ठी शुक्ल अषाढ़ को, तज अच्युत सुरधाम।
माँ त्रिशला के गर्भ में, आए वीर महान्॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

तेरस शुक्ला चैत्र को, जन्मे वीर जिनेश।
सिद्धारथ घर आँगने, उत्सव किए सुरेश॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

अगहन दसवीं कृष्ण को, तजा मोह परिवार।
बने तपस्वी तप सजे, होती जय-जयकार॥

ॐ ह्रीं मगशिरकृष्णदशम्यां तपमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

दसें शुक्ल वैशाख को, पाया केवलज्ञान।
शासन-नायक बन पुजे, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कार्तिक कृष्ण अमास को, हरे कर्मरज सर्व।
पावापुर से मोक्ष जा, दिए दिवाली पर्व॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्ण-अमावस्यायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

[यदि मात्र पूजन करना हो तो पेज नं. २३ पर जयमाला करके पूर्ण करना चाहिए।]

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्य...। -४

(जोगीरासा)

वर्तमान शासननायक जी, महावीर भगवंता।
जिनकी कृपा बड़ी वरदानी, देती सम्यक पंथा॥
जिनसूत्रों पर चल कर पाते, समवसरण अर्हन्ता।
वर्तमान के वर्धमान को, हो नमोस्तु जयवंता॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

महावीर शासन में हम तो, भले मोक्ष ना पाएँ।
लेकिन मोक्षमार्ग अपनाकर, दीवाली सुख पाएँ॥
पाप त्याग कर संयम धारें, दुर्गति चक्र नशाएँ।
'विद्या' के 'सुव्रत' निज नैया, दुख से पार लगाएँ॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
महावीर प्रभु को नमोऽस्तु कर, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य...।

===

श्री महावीर ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना

(दोहा)

कर्म इन्द्रियाँ जीत कर, बने जितेन्द्रिय नाथ।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१॥

अवधिज्ञान पाकर हुए, मृत्युंजय जिननाथ।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२॥

जिन परमावधि ज्ञान से, हो परमेष्ठी नाथ।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३॥

जिन सर्वावधि ज्ञान से, हरें विघ्न विख्यात।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४॥

अनन्तावधि जिनज्ञान से, हरे रोग दुखरात।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमोअणंतोहिजिणाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥५॥

कोष्ठबुद्धि जिनज्ञान से, मिले बुद्धि विख्यात।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥६॥

बीजबुद्धि जिनज्ञान से, मोक्षबीज शुरुआत।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥७॥

पदानुसारी ज्ञान से, जगत-पूज्यपद प्राप्त।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥८॥

संभिन्नश्रोतृ जिनज्ञान से, भेदज्ञान हो साथ।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमोसंभिण्णसोदाराणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥९॥

स्वयंबुद्ध परमात्म से, मिले सिद्ध सौगात।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१०॥

प्रत्येकबुद्ध परमात्म से, कर्म-वर्ग नश जात।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥११॥

जिनवर बोधितबुद्ध से, हो शुभ विद्या प्राप्त।
महावीर भगवान को, हो नमोस्तु नत माथ॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१२॥

(सखी)

मन भज ले रे महावीर, हो दीप अर्चना आई।
हम करते नमोस्तु आज, हो मंगलमय सुखदाई॥
जो सीधा सादा मन की, बातें जाने जन-जन की।
वो है ऋजुमति मनपर्यय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१३॥

जो मन की जान कुटिलता, दुख व्यथा मानसिक हरता।
वो विपुलमति मनपर्यय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१४॥

जो दसों दिशा में चमके, अज्ञान हरे आतम के।
वो दसपूर्वित्व जिनालय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वियाणं (दसपुव्वीणं) श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१५॥

जो चौदह गुणस्थानी, दे ज्ञान बना, ज्ञानी।
चौदह पूर्वित्व शिवालय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वियाणं (चउदसपुव्वीणं) श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१६॥

अष्टांग शुभाशुभ फल को, जो कहें करें मंगल को।
वह है अष्टांग महालय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ १७॥

जो अणिमा आदिक ऋद्धि, हम सबको दें समृद्धि।
वो पूज्य विक्रिया आलय, श्री महावीर प्रभु की जय॥

ॐ ह्रीं णमोविउव्वणपत्ताणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१८॥

(चौपाई)

विद्याधर नर संयमधारी, मंगल करें अमंगल हारी।
विद्याधर सुख के विद्यालय, महावीर स्वामी की जय-जय॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१९॥

तप बल से मुनि चलें जहाँ पर, जीव घात ना हुए वहाँ पर।
चारणऋद्धि ज्ञान हिमालय, महावीर स्वामी की जय-जय॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२०॥

बिना पठन-पाठन हों ज्ञानी, धार्मिक कृपा बड़ी वरदानी।
प्रज्ञाश्रमण करें भाग्योदय, महावीर स्वामी की जय-जय॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२१॥

तप बल से नभ में चल सकते, जीव दयाकर निज में रमते।
हैं आकाशगमन ज्ञानोदय, महावीर स्वामी की जय-जय॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२२॥

मर जा कहने पर मर जाते, पर यह बल उपयोग न लाते।
हैं आशीर्विष ऋद्धि दयोदय, महावीर स्वामी की जय-जय॥

ॐ ह्रीं णमो आसिविसाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२३॥

रोष नजर से जिसको देखें, वो मर जाये अतः न देखें।
ऋद्धि दृष्टिविष है जैनोदय, महावीर स्वामी की जय-जय॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२४॥

(हाकलिका)

दीक्षा ले संन्यास धरें, महा कठिन उपवास करें।
पूज्य उग्रतप ऋद्धि अभय, महावीर स्वामी की जय॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २५॥

तप करके भी तन चमके, अतिशय हैं जिनशासन के।
पूज्य दीप्ततप ऋद्धि सदय, महावीर स्वामी की जय॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२६॥

कर आहार निहार न हो, चमत्कार तप बल से हो।
पूज्य तप्ततप ऋद्धि निलय, महावीर स्वामी की जय॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२७॥

महा-महा उपवास करें, कष्ट हरें विश्वास भरें।
पूज्य महातप ऋद्धि अजय, महावीर स्वामी की जय॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२८॥

घोर तपस्या तूफानी, करके कर्म हरें ज्ञानी।
पूज्य घोरतप ऋद्धि विजय, महावीर स्वामी की जय॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २९॥

दुख दुर्भिक्ष हरें तपसे, मैत्री भाव रखें सबसे।
पूज्य घोरगुण ऋद्धि उदय, महावीर स्वामी की जय॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३०॥

जग संहारक बल पाकर, धर्म अहिंसा परमो धर।
घोर पराक्रम ऋद्धि हृदय, महावीर स्वामी की जय॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३१॥

(लघु चौपाई)

महा अघोर-ब्रह्म गुण धार, करें तपस्या जग हितकार।
महा अघोर-बह्म विज्ञान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३२॥

जिनका तन छूकर के लोग, स्वस्थ मस्त हों शीघ्र निरोग।
आमर्षौषधि ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३३॥

जिनके लार थूक कफ आदि, हरें रोग काया की व्याधि।
खेल्ल-औषधि ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३४॥

जिनका पाकर तप संयोग, बूँद पसीना हरले रोग।
जल्लौषधि है ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३५॥

जिनका पाकर तपो प्रभाव, रोग हरे मल मूत्र स्वभाव।
विप्रुष-औषधि ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं (विप्पोसहिपत्ताणं) श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३६॥

छूकर जिनकी देह समीर, बहकर करती स्वस्थ शरीर।
सर्वौषधि है ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३७॥

बिना थके मुहूर्त में पूर्ण, श्रुत चिंतन मन से सम्पूर्ण।
पूज्य मनोबल ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३८॥

बिना थके मुहूर्त में पूर्ण, श्रुत वाचन कर लें संपूर्ण।
पूज्य वचनबल ऋद्धि महान, जय-जय महावीर भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३९॥

(विष्णु)

लोक कनिष्ठा पर रखने का, जिसमें सम्बल है।
कायोत्सर्ग करें विध-विध के, वही कायबल है॥
मिले कायबल कायबली को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४०॥

रूखा भोजन भी हाथों में, बने दुग्ध जैसा।
देख तपोबल के प्रभाव को, अचरज हो ऐसा॥
सबको क्षमा क्षीरस्रावी दें, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४१॥

वश कर रसना षट्-रस त्यागें, लें नीरस आहार।
फिर भी हाथों में घृत जैसा, बने शक्ति दातार॥
प्रेम दया दे सर्पिस्रावी, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४२॥

रूखा सूखा भोजन भी तो, हाथों में आकर।
मधुर मिष्ठ मधु जैसा होता, तप प्रभाव पाकर॥
मधुस्रावी से सरस धर्म हो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४३॥

जिस प्रभाव से विष भी अमृत, जैसा हो जाता।
शत्रु-वर्ग का कपट-जाल भी, सफल न हो पाता॥
ज्ञानामृत सी अमृतस्रावी, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमडसवीणं (अमियसवीणं)श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४४॥

ऋषि के शेष भोज्य से चक्री, सेना पेट भरे।
पड़े न कम वा चार हाथ में, सुख से वास करे॥
यह अक्षीणमहानस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४५॥

ढाईद्वीप से सिद्धशिला तक, क्षेत्र सिद्ध निर्वाण।
कृत्रिमाकृत्रिम सिद्ध आयतन, स्वस्थ रखें तन प्राण॥
तन मन चेतन स्वस्थ बनाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐह्रीं णमो लोएसव्वसिद्धायदणाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४६॥

हीयमान अवगुण जो करके, वर्धमान होते।
उनके चरण जहाँ भी पड़ते, खुद अतिशय होते॥
अतिशयकारी वर्धमान गुण, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४७॥

महावीर शासन में गौतम- गणधर से लेकर।
विद्यागुरु तक आचार्यों की, परम्परा भजकर॥
ऋद्धि-सिद्धि प्रभु करुणा पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं श्रीं क्लीं वीर जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं णमो भयवदो महदि महावीरवड्ढमाण बुद्धरिसिणं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप वीरा, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' संभालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

महावीर जिनवर प्रभु, रखते सबका ध्यान।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय पूर्णार्घं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री महावीर-जिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(विष्णु)

बार-बार नर जीवन पा के, व्यर्थ गवाँ डाले।
हे प्राणी! अब महावीर के, कुछ तो गुण गाले॥
भाव भक्ति से गद्‌गद् होकर, प्रभु से नेह लगा।
प्रभु-कृपा से रत्नत्रय से, अपनी देह सजा॥१॥
जन्म समय अभिषेक हुआ तो, शंकित इन्द्र हुआ।
नन्हा सा बालक जलधारा, कैसे सहे मुआ॥
वीर! ज्ञान से जान मेरु को, दबा दिए थोड़े।
रखा इन्द्र ने **वीर** नाम तब, पूजन को दौड़े॥२॥
जब से त्रिशला माता के तुम, वसे गर्भ आके।
हुआ सदा सम्पन्न तभी से, राज्य तुम्हें पाके॥
दिन दुगुणी वा रात चौ गुणी, वर्द्धित प्रजा हुई।
नाम आपका **वर्द्धमान** तब, रखकर खुशी हुई॥३॥
संजय विजय मुनि ऋद्धिधारी, जिज्ञासा लाए।
तत्त्व ज्ञान का समाधान बस, तुम्हें देख पाए॥
और खुशी से नाम आपका, **सन्मति** रख डाले।
धन्य! धन्य! हे त्रिशला नन्दन!, सबके रखवाले॥४॥
खेल-खेल में चढ़े वृक्ष पर, जब सन्मति प्यारे।

संगम देव साँप बनकर तब, सबको फुसकारे॥
सब साथी तो डर भागे पर, वीर चढ़े सिर पर।
महावीर तब नाम देव ने, रखा प्रशंसा कर॥५॥

हुआ एक उत्पाती हाथी, वश में नहीं रहा।
इसे वीर! वश करने निकले, माना नहीं कहा॥
देख वीर को नतमस्तक गज, सूँड उठा डाला।
तभी नाम **अतिवीर** आपका, जग ने रख डाला॥६॥

पाँच-पाँच नामों के धारी, शासननायक हो।
जय हो! जय हो! नाथ आपकी, सबके पालक हो॥
पंचम गति का हमें लाभ हो, एसी करो कृपा।
हमें क्षमा कर अपना लो अब, मन की हरो व्यथा॥७॥

बस इतना आशीष हमें दो, हम भी वीर बनें।
वर्द्धमान बन महावीर बन, सन्मति रूप सनें॥
बन अतिवीर करें मन वश में, नशे रात काली।
अपने भी हों दिवस दशहरा, रातें दीवाली॥८॥

(दोहा)

भक्ति सहित हमने किया, पूजन वा गुणगान।
अपनी भी जयमाल हो, महावीर भगवान्॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

महावीर स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, महावीर जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महार्घ्य (हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-खंदारजी-चंदेरी-हाटकापुरा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

श्री महावीर—आरती

(छूम छूम छना नना...)

छूम छूम छना नना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
महावीर जिनशासन स्वामी, केवलज्ञानी अंतर्यामी-२
दीवाली वरदानी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
सिद्धारथ के राज दुलारे, त्रिशला की आँखों के तारे-२
कुण्डलपुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

महिमा—श्री महावीर दीप अर्चना

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री महावीर का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
श्री महावीर जिनराजा जी, हम सबके हो महाराजा जी।
हो वर्तमान के शासननायक स्वामी, जय-जय हो अंतर्यामी॥
श्री महावीर का पाठ...।
प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता है, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता है।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥
श्री महावीर का पाठ...।
आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥
श्री महावीर का पाठ...।
बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥
श्री महावीर का पाठ...।

===